# अध्याय – 9

# सामाजिक वानिकी एवं पारि–पुनर्स्थापन केन्द्र इलाहाबाद

## सामाजिक वानिकी एवं पारि–पुनर्स्थापन केन्द्र–एक सरसरी दृष्टि में

सामाजिक वानिकी एवं पारि–पुनर्स्थापन केन्द्र, इलाहाबाद को भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून के अधीन एक उन्नत केन्द्र के रूप में 1992 में स्थापित किया गया था। वर्तमान में यह वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून की एक शाखा है। इस केन्द्र का उद्देश्य पूर्वी उत्तर प्रदेश, उत्तरी बिहार तथा उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश के विन्ध्य क्षेत्र में सामाजिक वानिकी एवं पारि–पुनर्स्थापन के क्षेत्र में व्यावसायिक विशिष्टता का पोषण एवं संवर्धन करना है। इस केन्द्र के महत्वपूर्ण अनुसंधान कार्यकलाप हैं : रोपण स्टॉक सुधार कार्यक्रम, बंजर भूमि सुधार, कृषि वानिकी मॉडलों का विकास, वनीकरण द्वारा खनिज क्षेत्रों का सुधार, पारितंत्र की उत्पादकता, शीशम मर्त्यता पर अध्ययन आदि।

## वर्ष 2001–2002 के दौरान पूरी की गई परियोजनाएं

**परियोजना 1 : बंजर भूमि एवं कृषि वानिकी विकास (फ्रीप–01/2001)।** तकनीकी रिपोर्ट के लिए सम्पर्क करें प्रधान अन्वेषक– डॉ. एस. बी. सिंह।

**उपलब्धियां :** जलाक्रांत सोडीय स्थलों के सुधार के लिए विभिनन मृदा संशोधनों के साथ ग्यारह प्रजातियों का परीक्षण किया गया। मृदा संशोधनों के साथ टीला रोपण टर्मिनेलिया अर्जुना, ऐकेशिया निलोटिका, यूकेलिप्टस कमल्डूलिनसिस, प्रोसोपिस जूलीफ्लोरा और डैल्बर्जिया सिस्सू के लिए, अन्य प्रजातियों की तुलना में, उपुयक्त पाया गया।

**परियोजना 2 : विन्ध्य पहाड़िया और गांगेय मैदानों में पर्यावरणीय पुनर्स्थापन (फ्रीप–02/2001)।** तकनीकी रिपोर्ट के लिए सम्पर्क करें, प्रधान अन्वेषक – श्रीमती कुमुद दुबे।

**उपलब्धियां :** सिलिका खनित क्षेत्रों के सुधार के लिए, शंकरगढ़ और इलाहाबाद स्थल में दो रोपण परीक्षण विकसित किए गए। पहले मॉडल में, वर्षा पर आधारित अवस्थाओं के अन्तर्गत सात प्रजातियों पर गेहूं पुआल, चावल भूसी और ब्यूटीया मोनोस्पर्मा की पत्तियों के पलवारों का उपयोग किया गया। यह पाया गया कि प्रोसोपिस जूलिफ्लोरा, पिथीसीलोबियम डल्से, ऐजेडिरेक्टा इंडिका और पोंगेमिया पिनाटा ने अन्यों की अपेक्षा अच्छा प्रदर्शन किया। गेहूं पुआल के पलवार ने सर्वोत्त्म प्रदर्शन किया। दूसरे मॉडल में, पलवार का उपयोग नहीं किया गया और ग्यारह प्रजातियों का परीक्षण किया गया। प्रोसोपिस जूलीफ्लोरा, पिथीसीलोबियम डल्से, जिजीफस मार्शियाना और

ऐकेशिया कैटेचू ने इस प्रकार की अवस्था में अच्छा प्रदर्शन किया। नमी दबाव स्थल में वर्षा पर आधारित अवस्था के तहत वानिकी प्रजातियों के वृद्धि प्रदर्शन का अध्ययन किया गया। रोपण के पांच साल बाद अन्यों की अपेक्षा ए. इंडिका, डी. सिस्सू, ई. आफिसिनेलिस, ए. लैबेक और टी. अर्जुना ने अच्छा प्रदर्शन किया।

**परियोजना 3 : पारितंत्रों की उत्पादकता (फ्रीप–03/2001)।** तकनीकी रिपोर्ट के लिए सम्पर्क करें, प्रधान अन्वेषक – डॉ. नीरज पंत।

**उपलब्धियां** : शंकरगढ़ के निम्नीकृत वनों में ब्यूटीया मोनोस्पर्मा के जैवमात्रा अध्ययन के लिए उत्पादकता मूल्यांकन हेतु कार्यपद्धति विकसित की गई। चयनित प्रजातियों (डैल्बर्जिया सिस्सू, ऐकेशिया निलोटिका, कैज्वारिना इक्सिसिटिफोलिया, ब्यूटीया मोनोस्पर्मा और ऐकेशिया कैटेचू) के लिए बी ए एम सहित जैव उर्वरकों के उपयुक्त पैकेज विकसित किए गए।

## वर्ष 2001–2002 के दौरान जारी परियोजनाएं

**परियोजना 1 : इलाहाबाद जिले के विन्ध्य क्षेत्र में सूक्ष्म जीवी प्रौद्योगिकी द्वारा सिलिका खनन भूभागों का पुनर वनस्पतिकरण (एफ आर आई–141/सी एस एफ ई आर–01/2002)।** प्रधान अन्वेषक – श्री वी.के. सिंह।

**स्थिति** : सिलिका खनन क्षेत्रों का सर्वेक्षण। जीवाण्विक वनस्पति के विश्लेषण के लिए नमूनों के संग्रहण। लाभकारी जीवाणुओं के पृथक्करण और ब्लू ग्रीन एल्गी का पात्र संवर्धन किया जा रहा है।

**परियोजना 2 : पूर्वी उत्तर प्रदेश में बुकानेनिया लेंजन का अनुसंधान एवं विकास (एफ आर आई–141/सी एस एफ ई आर–02)।** प्रधान अन्वेषक– श्री गंगा प्रसाद।

**स्थिति** : उत्कृष्ट जननदृव्य का सर्वेक्षण एवं पहचान। कैन्डिडेट धन वृक्षों का अंकन। एकत्रित बीजों की अंकुरण क्षमता परीक्षण और अंकुरण परीक्षण। एकत्रित बीजों के प्रोटीन विश्लेषण के लिए विधियों का मानकीकरण।

**परियोजना 3 : शीशम मर्त्यता के जैविकीय कारकों की जांच (एफ आर आई–141/सी एस एफ ई आर–03/2001)।** प्रधान अन्वेषक– श्रीमती कुमुद दुबे।

**स्थिति** : म्लानि स्पाट्स का सर्वेक्षण। म्लानि के कारण क्षतियों का मूल्यांकन। सूक्ष्म–वनस्पति के नमूना संग्रहण और विश्लेषण। रोगजनक (फ्यूजेरियम प्रजाति) का पृथक्करण।

## वर्ष 2001–2002 के दौरान शुरू की गई नई परियोजनाएं

**परियोजना 1 : सतत उत्पादन एवं उत्पादकता के लिए उत्तर प्रदेश के पूर्वी भाग में सिंचित भूमि हेतु कृषि वानिकी मॉडलों का विकास (14–न्यू/2002)।** प्रधान अन्वेषक – डॉ. एस.बी. सिंह।

**स्थिति** : साहित्य सर्वेक्षण।

## विदेशों से सहायता प्राप्त परियोजनाएं

## वर्ष 2001–2002 के दौरान पूरी की गई परियोजनाएं

**परियोजना 1 : रोपण स्टॉक सुधार कार्यक्रम (डब्ल्यू बी–फ्रीप)।** प्रधान अन्वेषक– श्री वी.के. सिंह।

**उपलब्धियां** : सोहेलवा वन्यप्राणि वन प्रभाग में 60 हैक्टेयर क्षेत्र में डैल्बर्जिया सिस्सू के बीज उत्पादन क्षेत्र स्थापित किए गए। डैल्बर्जिया सिस्सू के 3 हैक्टेयर क्लोनीय बीज उद्यान स्थापित किए गए। उत्तर प्रदेश राज्य वन विभाग के सहयोग से 30.5 हैक्टेयर पौध बीज उत्पादन क्षेत्र (डैल्बर्जिया सिस्सू 20 हैक्टेयर और ऐकेशिया निलोटिका 10.5 हैक्टेयर) स्थापित किए गए।

डैल्बर्जिया सिस्सू (शीशम) के पौध बीज उत्पादन क्षेत्र

### अनुसंधान उपलब्धियां

| राज्य | 2001–2002 में पूरी की गई परियोजनाएं की संख्या | 2001–2002 में जारी परियोजनाएं की संख्या | 2001–2002 में शुरू की गई परियोजनाएं की संख्या |
|---|---|---|---|
| उत्तर प्रदेश | 4 | 4 | 1 |
| उत्तरांचल | 1 | – | – |

### प्रौद्योगिकी मूल्यांकित एवं हस्तांरित

परीक्षण के तहत 11 वृक्ष प्रजातियां लेकर चार मॉडलों का परीक्षण करने के बाद जलाक्रांत सोडीय बंजरभूमि पर प्रभावी वनीकरण मॉडल विकसित किया गया।

## शिक्षा और प्रशिक्षण

| क्र. सं. | व्यक्ति का नाम | विषय | स्थल | अवधि |
|---|---|---|---|---|
| 1 | डॉ. नीरज पंत | शोध लेखन | व.अ.सं., देहरादून | 3.11.2001 से 11.11.2001 |

## सम्मेलन, बैठकें, कार्यशालाएं, संगोष्ठी, प्रदर्शनियां

| क्र. सं. | विषय | दिनांक |
|---|---|---|
| 1. | संयुक्त वन प्रबंध एवं वानिकी विस्तार | 7.12.2001 |
| 2. | बीज प्रौद्योगिकी | 13.12.2001 |
| 3. | आधुनिक पौधशाला तकनीकें | 14.12.2001 |
| 4. | औषधीय पादप | 15.12.2001 |
| 5. | गोरखपुर वन प्रभाग में पी एस आई पी पर प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन | 23.11.2001 |
| 6. | गोंडा वन प्रभाग में पी एस आई पी पर प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन | 6.12.2001 |
| 7. | विद्यार्थियों के लिए जागरूकता कार्यक्रम | 26.12.2001 |
| 8. | पॉपलर पर सी टी ए कार्यशाला | 27.11.2001 से 28.11.2001 |
| 9. | बीज प्रौद्योगिकी पर सी सी ए कार्यशाला | 11.12.2001 से 12.12.2001 |

## कार्यशालाओं / बैठकों में सहभागिता

| क्र.सं. | व्यक्ति का नाम | कार्यशाला / बैठक में सहभागिता | संस्थान | अवधि |
|---|---|---|---|---|
| 1. | डॉ. एस.बी. सिंह | जे.एफ.एम पर कार्यशाला | नरेन्द्रदेव विश्व–विद्यालय फैजाबाद | 15.5.2001 |
| 2. | डॉ. एस.बी. सिंह | मृदा पर सी टी ए कार्यशाला | उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर | 16.10.2001 से 17.10.2001 |
| 3. | डॉ. अनुभा श्रीवास्तव | सामाजिक–आर्थिक पर सी.टी.ए. कार्यशाला | वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून | 30.10.2001 से 31.10.2001 |

## प्रतिष्ठित आगन्तुक

1. श्री आर.पी.एस. कटवाल, भा.व.से., महानिदेशक, भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून, 21.3.2002 से 22.03.2002।
2. श्री अशोक गर्ग, भा.व.से., मुख्य वन संरक्षक, पूर्वी क्षेत्र, उत्तर प्रदेश, 7.12.2001।